National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 11-02-2024, Accepted: 06-03-2024, Published: 29-03-2024
Volume 9, Issue 1, 2024, Page No. 56-57

सुरहेड़ाः स्वतंत्रता सेनानियों का गाँव और 18 गाँवों की प्रधानी का जिम्मा

डॉ. एसके पांडेय
एसोसिएट प्रोफेसर, जर्नलिज्म एवं मास कम्यूनिकेशन विभाग, एसजीटी यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम, हरियाणा, भारत

सारांश
अपने देश में शहरीकरण की प्रक्रिया बहुत तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में गाँव शहर बनते जा रहे हैं। बात जब दिल्ली की आती है तो दिल्ली के बहुत सारे गाँव शहर में तब्दील हो रहे हैं या दिल्ली के तमाम गाँवों में शहर जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। जब कोई गाँव शहरीकरण की तरफ बढ़ता है, तो वहाँ शहर जैसी भागमभाग और व्यस्तताएँ भी बढ़ती है। ऐसे में एक जरूरी सवाल होता है कि क्या गाँव अपने मूल से कट जाएंगे। शहरीकरण के कुछ वर्षों बाद क्या गाँव अपनी परंपरा, विरासत, इतिहास और ग्रामीण धरोहर को संजो पाएंगे। इस शोध पत्र के जरिए दिल्ली के एक गाँव सुरहेड़ा के इतिहास, परंपरा और विरासत को जानने की कोशिश की गई है। इस कार्य को पूरा करने के लिए गुणात्मक शोध पद्धति के अंतर्गत साक्षात्कार टूल का सहारा लिया गया है। भविष्य में इस शोध पत्र की प्रासंगिकता बनी रहेगी, क्योंकि जब कभी सुरहेड़ा गाँव के इतिहास की बात आएगी, तो यह शोध पत्र संदर्भ पत्र के रूप में माना जा सकता है।

मूल शब्दः रायसीना, डहर, प्रधानी, बटाई प्रथा, जमींदारी प्रथा, हवेली

किसी ने बिलकुल सही लिखा है–
"शहर की हलचल से दूर, यहाँ मन को आराम है,
घर तो अपना गाँव में ही है जनाब, शहर में तो बस मकान है।"[1]
सच है कि गाँवों में जो सुकून और अपनापन मिलता है, वह शहर में कहीं नहीं मिल पाता। यही कारण है कि विकास की कितनी ही ऊँचाई पर हम पहुँच जाएँ, गाँव हमें अपनी तरफ खिंचते हैं। जब हम दिल्ली के एक गाँव सुरहेड़ा पहुँचते हैं तो हमारी मुलाकात होती है 70 वर्षीय श्री कृपाराम शर्मा, गाँव के एक नौजवान केशव कुमार और गाँव के कुछ अन्य लोगों से। श्री शर्मा दिल्ली सरकार में एसडीएम रह चुके हैं। केशव कुमार जर्नलिज्म में अपना करियर सँवारने में लगे हैं। श्री शर्मा का एसडीएम पद तक पहुँचना बताता है कि यह गाँव अपनी परम्परा और विरासत के साथ शिक्षा और विकास के मामले में कमतर नहीं है। श्री शर्मा और श्री केशव से सुरहेड़ा गाँव के बारे जानने के लिए बातचीत की शुरुआत होती है। उन्होंने अपने गाँव के बारे में जो कुछ बताया पेश है, उन्हीं की जुबानी–
सुरहेड़ा एक ऐतिहासिक गाँव है और आजादी की लड़ाई में इस गाँव का योगदान रहा है। इस संदर्भ में श्री शर्मा का कहना है कि स्वतंत्रता सेनानी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज में सुरहेड़ा के लगभग 10 लोग थे, जिन्होंने देश को आजाद करने के लिए अपने जान न्योछावर कर दिए।
यह गाँव एक पढ़ा–लिखा गाँव माना जाता है। इस गाँव में कई लोग बड़े पदों पर हैं। श्री निरंजन शर्मा इलाहाबाद में डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में जज हैं। गाँव के श्री एलके यादव आईएएस रहे हैं। श्री जिले सिंह सेना में ऑनरेरी कैप्टन रह चुके हैं। इसके अलावा श्री जगदीश यादव आर्मी में कमीशंड ऑफिसर रहे हैं। इस गाँव के लोग सेना, पुलिस, अध्यापन समेत तमाम क्षेत्रों में सेवारत हैं।
सुरहेड़ा का प्राचीन नाम सुनहेड़ा था। यह गाँव कब बसा और किसने बसाया, इसके बारे में कोई ठोस जानकारी गाँव के लोगों को नहीं है। हाँ, गाँव के लोग बताते हैं कि 1400 ई. से पहले यह गाँव बस गया था। गाँव में पहले जमींदारी प्रथा थी। जो लोग जमीन के मालिक थे, उन्होंने अपनी जमीन खेती के लिए दूसरों को दे दी। इसे बटाई प्रथा भी कहा जाता है।
राजा टोडरमल की देखरेख में दिल्ली में जमींदारी प्रथा लागू की गई थी। दिल्ली लैंड रिफॉर्म्स एक्ट 19542 के तहत जमींदारी प्रथा में कुछ बदलाव किया गया। उस समय दिल्ली के मुख्यमंत्री चौधरी ब्रह्म प्रकाश थे। तब भूमि को दो भागों– मरुसी तथा गैर–मरुसी में बाटा गया। 1954 के लैंड एक्ट के तहत भूमि पर अधिकार जमींदार का नहीं बल्कि जो उस भूमि पर फसल बोता था, उसका हो गया यानी जमींदारी प्रथा खत्म होकर भूमिदारी प्रथा शुरू हो गई। चकबंदी कानून 19533 में आया और इस कानून के आने पहले ही इस गाँव की जमीन की चकबंदी हो चुकी थी।
श्री केशव बताते हैं कि दिल्ली एक तरफ देश की राजधानी है, विकास का प्रतीक है, वहीं दूसरी तरफ दिल्ली में गाँव भी हैं। दिल्ली में कुल 360 गाँव थे। मौजूदा दौर में दिल्ली में गाँवों की कुल संख्या 348 हैं। दिल्ली का पहला गाँव जिसे विकास के चलते हटाया गया, वह है मालचा। इसे रायसीना गाँव भी कहा जाता है। दिल्ली के गावों की जमीन पर आज की लुटियंस दिल्ली बसी है। इसी तरह गाँवों से 12वाँ गाँव जो हटाया गया, उसका नाम था नांगल देवत, जिस पर आज दिल्ली के इंदिरा गाँधी अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे का टर्मिनल 3 एवं ऐरोसिटी बसी हुई है।
केशव बताते हैं कि वैसे तो दिल्ली के गाँवों में पंचायती राज व्यवस्था नहीं है। यहाँ नगर निगम प्रणाली लागू है। (उल्लेखनीय है कि पंचायती राज व्यवस्था दिल्ली, नगालैंड, मेघालय और मिजोरम में लागू नहीं है।) पंचायती राज व्यवस्था नहीं होने के बावजूद सामाजिक मान्यता के तौर पर प्रधानी की परम्परा आज भी कायम है। दिल्ली के सभी 360 गाँवों की प्रधानी पालम गाँव करता है। 18 गाँवों की प्रधानी सुरहेड़ा करता है और 12 गाँवों की प्रधानी ढाँसा गाँव करता है। वे बताते हैं कि सुरहेड़ा ईसापुर वार्ड (वार्ड नं. 35) के अंतर्गत आता है। नजफगढ़ से इसकी दूरी लगभग 5 किलोमीटर है तथा गुड़गाँव से यह लगभग 12 किलोमीटर दूर है।
केशव कहते हैं कि इस गाँव में 2 पुरानी हवेलियाँ हैं, लेकिन उसमें अब कोई रहता नहीं है। अतीत के पन्नों की तरफ जाते हुए वे कहते हैं कि पुराने लोग बताते हैं कि इस हवेली का निर्माण 1965 ई. में हुआ था। गाँव की कुल देवी और कुल देवता का नाम पूछने पर श्री केशव बताते हैं कि यहाँ करीब एक हजार साल पुराना ऐतिहासिक शिव मंदिर है, जिसे हम लोग ठाकुर द्वारा कहते हैं। गाँव के लोग भगवान शिव को ईष्ट देव के रूप में पूजते हैं। इसके अलावा दादा नोकजा को भी हम पूजते हैं।

वीरवार को दादा नोकजा को गुड़ और अनाज चढ़ाने की परम्परा वर्षों से चली आ रही है।

पूर्व एसडीएम श्री शर्मा के अनुसार, बहुत पहले गाँव में घुमंतू जातियाँ आती थीं। कोई घुमंतू जाति आई। जब वह घुमंतू परिवार इस गाँव में आया तो उसे लड़का हुआ। इस खुशी में उस घुमंतू परिवार ने गाँव में एक कुएँ का निर्माण कराया, जिसका पानी बहुत मीठा होता था। आज भी उस कुएँ का अवशेष है।

श्री शर्मा बताते हैं कि सुरहेड़ा और आसपास के गाँव 'खादर के गाँव' कहे जाते हैं, यानी जमीनी स्तर से थोड़े नीचे (झील) में पड़ने वाले गाँव। राजस्व के रिकॉर्ड में नजफगढ़ को झील ही कहा जाता है। 1973 की बाढ़ का प्रभाव भी नतीजन इन गावों पर ज्यादा हुआ था। सुरहेड़ा गाँव में एक 'डाबर' हरे कृष्णा गौशाला भी है जो दिल्ली की दूसरी सबसे बड़ी गौशाला है। इसी के पीछे एक नहर निकलती है, जिसे स्थानीय भाषा में बदरोध्डहर कहा जाता है। यहाँ कृषि के लिए लम्बी लम्बी पट्टियां होती हैं, जिनकी सिंचाई का जल इसी नहर से लिया जाता है, हालाँकि यह नहर केवल बारिश के समय में ही बहती है।

श्री शर्मा बताते हैं कि आज से 4–5 दशक पहले तक गाँव की मुख्य अर्थव्यस्था कृषि केंद्रित थी, मगर अब ऐसा नहीं है। अब कृषि केवल एक क्रिया के रूप में होती है। गाँव की अर्थव्यस्था में इसका बहुत बड़ा योगदान नहीं है। श्री शर्मा बताते हैं कि गाँव के बमुश्किल 15–20 परिवार ही अब ऐसे होंगे, जिनमें नौकरी नहीं हैं और वे अब भी कृषि पर निर्भर करते हैं।

पूर्व एसडीएम श्री शर्मा बताते हैं कि सुरहेड़ा की आबादी 5 हजार है। यहाँ वोटरों की कुल संख्या 2700 है। इस गाँव के लगभग 500–700 लोग बाहरी है। ये पूर्वांचल के लोग हैं और इनमें से काफी संख्या में लोग मेहनत–मजदूरी करने वाले हैं। यह गाँव यादव बहुल है। यादवों के बाद ब्राह्मणों की संख्या सबसे अधिक है। इसके अलावा नाई, खाती, कुम्हार, वाल्मिकि तथा कई अन्य जातियाँ भी हैं इस गाँव में।

श्री केशव बताते हैं कि गाँव में सभी जातियों के लोग प्रेम–भाव से रहते हैं। लोगों के बीच अनबन न के बराबर होती है, लेकिन एक घटना को वे याद करते हैं कि 1973 में होलिका दहन के दिन गाँव में झगड़ा हुआ और उस झगड़े में एक व्यक्ति की मौत हो गई। उस दिन से इस गाँव में होलिका दहन नहीं होता। लोग होली भी नहीं मनाते हैं। यह एक उदाहरण है कि एक परिवार के दुःख में किस तरह पूरा गाँव शामिल हुआ और घटना के लगभग 50 साल बाद भी उस परिवार के साथ पूरा गाँव है। इस तरह के भाईचारे की भावना केवल गाँवों में ही संभव है, शहर के लोगों को तो इस तरह की भावना से सीख लेनी चाहिए।

सुरहेड़ा गाँव से दिल्ली मेट्रो 5 किलोमीटर, दिल्ली एयरपोर्ट 22 किलोमीटर तथा नई दिल्ली रेलवे स्टेशन 44–45 किलोमीटर की दूरी पर हैं। सुरहेड़ा गाँव में एक प्राथमिक विधालय, एक सर्वोदय विद्यालय व दिल्ली सरकार का एक मोहल्ला क्लिनिक भी है।

'सर्जरी, एडमिट होने का खर्चा कम और इलाज अच्छा'रू जब श्री कृपा राम शर्मा से सवाल किया जाता है कि एसजीटी विश्वविद्यालय के इस क्षेत्र में आने से आपके गाँव और इस क्षेत्र के विकास पर क्या प्रभाव पड़ा, वे बताते हैं कि एसजीटी विश्वविद्यालय हमारे गाँव से करीब 17 किलोमीटर दूर है। इस विश्वविद्यालय के इतना पास होने से हमारे गाँव में शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ी है। हमारे गाँव के पास दिल्ली विश्वविद्यालय का भगिनी निवेदिता कॉलेज है, लेकिन चूँकि ये एक कॉलेज है, इसलिए इसमें लिमिटेड विषयों की पढ़ाई होती है और इसमें दाखिला मिलना भी मुश्किल होता है। एसजीटी विश्वविद्यालय में बहुत सारे विषयों की पढ़ाई होती है और अच्छी पढ़ाई होती है। एसजीटी विश्वविद्यालय के कारण हमारे गाँव के बच्चों को बहुत अच्छी सुविधा मिली है। हमारे गाँव से एसजीटी में करीब 10 बच्चे हर साल दाखिला लेते हैं और अपनी पढ़ाई पूरी करते हैं। श्री कृपा राम शर्मा बताते हैं कि एसजीटी की पढ़ाई क्वालिटेटिव है।

एसजीटी विश्वविद्यालय ने बहुत छोटे स्तर पर ही सही, लेकिन इस गाँव की अर्थ–व्यवस्था में भी योगदान दिया है। आज नौकरी मिलना कितना कठिन माना जाता है। श्री कृपा राम शर्मा बताते हैं कि एसजीटी विश्वविद्यालय में इस गाँव के 5 लोग नौकरी करते हैं। इस तरह इस गाँव के 5 परिवारों की अर्थ–व्यवस्था को बनाने में योगदान दिया है तथा गाँव के अन्य लोगों को भी लगता है कि उनकी नौकरी वहाँ लग सकती है।

श्री कृपा राम शर्मा एसजीटी अस्पताल को मल्टी–स्पेशलिटी होस्पिटल बताते हैं। उनका कहना है कि हमारे गाँव के पास है यह अस्पताल और इसके साथ ही वहाँ जाने में ट्रैफिक की समस्या का भी सामना नहीं करना पड़ता। वे कहते हैं कि एसजीटी अस्पताल एक ऐसा होस्पिटल है, जहाँ अंडर वन रूफ सारी फैसिलिटी एवलेबल हैं। सबसे बड़ी बात है कि वहाँ पहुँच जाने के बाद पूरा इलाज हो जाता है, कहीं अन्य जगह रेफर करने की स्थिति नहीं बनती। वे बताते हैं कि वहाँ इलाज सस्ता भी है। सर्जरी और एडमिट होने के मामले में एसजीटी अस्पताल हमारे गाँव के लिए बेस्ट माना जाता है, क्योंकि दूसरे अस्पतालों की तुलना में वहाँ सर्जरी और एडमिट होने का खर्चा कम आता है और इलाज भी अच्छा होता है।

निष्कर्ष

सुरहोड़ा गाँव एक प्राचीन गाँव है। इसका प्राचीन नाम सुनहेड़ा था। यह अपनी परंपरा और इतिहास में अपने प्रचीन गौरव को समेटे हुए है। देशभक्ति का जज्बा यहाँ बहुत पहले से ही लोगों के दिलों में बसा हुआ है। आज गाँव में नौकरी–पेशा लोगों की संख्या काफी अधिक है। यहाँ की गौशाला की गणना दिल्ली की बड़ी गौशालाओं में होती है। गाँव में ऐतिहासिक मंदिर है और हवेलियाँ भी हैं। आजादी की लड़ाई में इस गाँव के लोगों का बड़ा योगदान है। महान स्वतंत्रता सेनानी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज में इस गाँव के लगभग 10 लोग थे, जिन्होंने देश को आजाद करने के लिए अपने प्राणों की आहूति दी।

संदर्भ सूची

1. https%//twitter-com/LakshmiRIyer/status/1484019768864632833
2. https://www.indiacode.nic.in/bitstream/123456789/14644/1/1954delhi*8*.pdf
3. https://supremetoday.ai/search/49-consolidation-act